दैनिक जागरण | भोपाल, 11 दिसम्बर 2019
www.jagranmp.com/epaper

गीत-संगीत, धुन व प्रजेंटेशन के साथ पहली बार देखी-सुनी ऐसी गांधी कथा

दुनिया भर में गांधी कथा की प्रस्तुति देने वालीं डॉ. शोभना राधाकृष्ण की भारत भवन में प्रस्तुति

● जागरण रिपोर्टर ●

महात्मा गांधी के 150वें जन्मवर्ष पर देश की जानी-मानी गांधीवादी चिंतक एवं विचारक डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने भारत भवन में मंगलवार को गांधी कथा का वाचन किया। कथा वाचन के साथ गीत-संगीत, धुन, प्रजेंटेशन के साथ हुआ। उनकी यह अनूठी गांधी कथा जो देश के अलावा दुनिया के लगभग 30 देशों में प्रस्तुत हो चुकी है, भोपाल में इसकी यह पहली प्रस्तुति थी।

गांधी जी किसी धर्म को नहीं मानते थे

डॉ. राधाकृष्ण ने अपनी कथा में बताया गांधी जी हर युग के रोल मॉडल हैं। वे जीवन के प्रति हमेशा सकारात्मक रहते थे। सत्य को परमेश्वर माना।

गांधी जी ने कभी भय का आवरण अपने ऊपर नहीं चढ़ने दिया। किस तरह एक साधारण व्यक्ति आसाधारण व्यक्ति बना उसका वे उदाहरण हैं।

अपनी गलती को समझते थे, पश्चाताप करते थे। समय का आदर करते थे। वे कहते थे कि गया हुआ समय वापस नहीं आता। वे सभी धर्मों को मानते थे, सभी धर्म के लोगों से उनकी मित्रता थी। गांधी जी ने नई तालीम के महत्व को रेखांकित किया।

गांधी को जानना है तो सत्य के प्रयोग को पढ़ें

डॉ. राधाकृष्ण ने गांधी जी के जीवन को जानने का सरल तरीका उनकी लिखी पुस्तकों को पढ़ने का बताया। उनके 150वें जन्मवर्ष पर सत्य के प्रयोग किताब को पढ़ें। गांधी जी का विचार था जितना काटो, उतना पहनो। उन्होंने स्वदेशी अपनाया, विदेशी सामग्रियों का बहिष्कार किया। सुभाष चंद्र बोस भी गांधी जी के साथ जेल गए थे। यह प्रस्तुति लगभग 90 मिनट की रही। उनके इस सम्प्रेषणीय कार्यक्रम में सोदाहरण दृश्यपरक प्रदर्शन भी शामिल रहा। वे अब तक लगभग 125 बार यह कथा कह चुकी हैं।

गांधी जी के प्रिय भजन रहे शामिल

गांधी कथा में गांधी जी के प्रिय भजन, गांधी कथा धुन व गीत की प्रस्तुति गायिका स्वाति भगत व उनके साथी कलाकारों ने की। गांधी कथा में गांधी जी का दर्शन, विचार, आश्रम जीवन, दिनचर्या, संयम का नैतिक जीवन, देश की निस्वार्थ सेवा, अपरिग्रह और एकादश व्रत, रचनात्मक कार्यक्रम और सत्याग्रह की व्याख्या है। गांधी कथा में मन वाणी कर्म में सत्य तू बोल..., लगी रे लगन, लगी रे लगन..., न ये तेरा, न यह मेरा..., कोटि कोटि लोग गए..., सत्याग्रह की परख... आदि गीतों की प्रस्तुति हुई।